SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

jk"Vªh; ikBîp;kZ dh :ijs[kk 2005 fgUnh Hkk"kk ikBîiLrdksa dh çfr vfHkèkkjdksa dh çR;{k.k dk vè;;u

txnEck çlkn] (Ph.D.), शिक्षा विभाग
एलिट पब्लिक बी.एड. कॉलेज, मेदिनीनगर, झारखंड़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
txnEck çlkn] (Ph.D.), शिक्षा विभाग
एलिट पब्लिक बी.एड. कॉलेज,
मेदिनीनगर, झारखंड़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/02/2023
Revised on : -----
Accepted on : 08/02/2023
Plagiarism : 00% on 01/02/2023

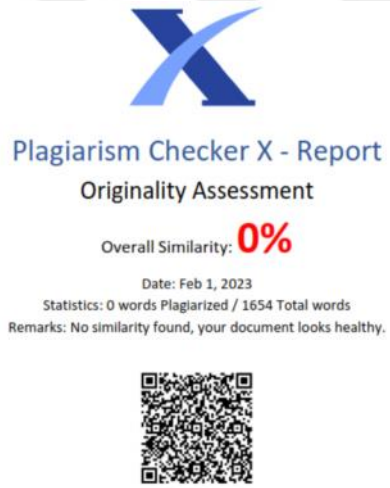

'kks/k lkj

मानव जीवन की अनेक घटनाएँ विचार इतने बहुदर्शी है कि इन सब मे से अधिक महत्व रखने वाले तथ्यों को ही छाँटकर ही अध्यापन के लिए व्यवस्थित ढ़ग से पाठ्यक्रम में रखना चाहिए, निश्चित ही इसमे प्रमुख भूमिका पाठ्यक्रम की होती है। यह छात्र एवं अध्यापक को एक दूसरे से जोड़ने वाली कड़ी का काम करता है। NCF 2005 का मुख्य सूत्र "Learning without burden" है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 मे स्वतन्त्रता के बाद पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 मे स्वतन्त्रा के बाद पाठ्यचर्या मे जितने सुधार हुए उनके प्रयासों पर बल दिया गया हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या को शिक्षा की राष्ट्रीय व्यवस्था विकसित करने का एक साधन होना चाहिए जो भारतीय संविधान के राष्ट्रीय के दर्शन को अपनी आधार भूमि मानते है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का अनुवाद संविधान की आठवी अनुसूची मे दी गयी सभी भाषाओं में किया गया है। यह दस्तावेज ऐसी रूपरेखा प्रस्तुत करता है जिसके अन्तर्गत शिक्षक व विद्यालय उन अनुभवों का चुनाव कर सकते है और उनकी योजना बना सकते है जो बच्चों के लिए लाभकारी हो। शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या की परिकल्पना इस रूप मे की गयी है कि बालक का चहुँमुखी विकास हो सके। बालको को शिक्षण प्रक्रिया रटन्त पद्धति से मुक्त हो। बालको को परीक्षण करके तथ करके सीखने पर बल दिया गया है।

e[; 'kCn

jk"Vªh; ikBîp;kZ] :ijs[kk] fgUnh Hkk"kk] ikBîiLrd] çR;{k.k-

çLrkouk

आज के इस युग मे किसी भी राष्ट्र या व्यक्ति के

समृद्धि का मूलाधार शिक्षा ही है। आज के समय में बच्चों को इतना योग्य एव सक्षम बनाना की वे जीवन के अर्थ को समझ सके और अपनी बहुमुखी प्रतिभा को प्रर्दाशित करने का अवसर प्राप्त हो सके। आज की शिक्षा प्रणाली बेवजह बच्चों पर दबाव डालती है। शिक्षा को उन मूल्यों को प्रसारित करने में सक्षम होना चाहिए जो बालकों में समानता, मानवता और नैतिक मूल्यों की शिक्षा देने मे सफल हो सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 का पुनरावलोकन विशेष रूप से बच्चों पर पाठ्यचर्या के बढ़ते बोझ की समस्या को हल करने के उद्देश्य से आरम्भ किया गया था।

यह दस्तावेज पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकों की रूपरेखा तैयार करने व परीक्षा प्रणाली के सुधार में शामिल, शिक्षकों, पदाधिकारियों को निर्णय लेने मे सझम बनाने का प्रयास है। महात्मा गांधी ने शिक्षा को ऐसे माध्यम के रूप मे देखा था जो सामाजिक व्यवस्था मे व्याप्त अन्याय, हिंसा व असमानता के प्रति राष्ट्र की अंतरात्मा को जगा सके। शिक्षा की नयी तालीम ने आत्मनिर्भरता व व्यक्ति के आत्मसम्मान पर जोर दिया था।

वर्ष 1976 तक भारतीय संविधान के अर्न्तगत राज्य सरकारो को स्कूली शिक्षा सम्बन्धी सभी निर्णय लेने का अधिकार था। उनके अधिकार क्षेत्र मे पाठ्यचर्या भी आती थी, हिन्दी भाषा में बच्चे कहानी सुनते है या पढ़ते है तो बच्चों को कुछ रेखाचित्र या कहानी के कुछ अंश संक्षिप्त वर्णन के साथ दे और उन्हे पूरा करने का अवसर है। आज हर विद्यालयों में गतिविधि आधारित शिक्षण पर जोर दिया जा रहा है लेकिन वास्तविकता मे यह कागजो तक ही सीमित रह गया। गतिविधियाँ शिक्षक को अवसर प्रदान कराती है कि वे बच्चों पर ध्यान दे सके और बच्चों की रूचि के अनुसार कुछ बदलाव ला सके।

बच्चों को घरेलू भाषा स्कूलो मे शिक्षण का माध्यम हो विशेषकर प्राथमिक स्तर पर। भाषाओं मे संवाद करने की क्षमता पूर्णतः विकसित होती है बच्चों में ध्वनि, शब्द, वाक्य के स्तर पर भी उनका पूरा नियन्त्रण होता है। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के भाषा मे सुधार करने के बजाय उसी रूप मे स्वीकार करना चाहिए। बच्चे के द्वारा अपनायी जाने वाली घरेलू भाषा को उचित सम्मान बनाये रखना चाहिए। भाषा शिक्षण केवल भाषा की कक्षा तक ही सीमित नही होता किसी भी विषय को सीखना मतलब उसके सम्प्रत्यय, उसकी शब्दावली आदि को समझना है। कहानी, कविता, गीतो और नाटको के माध्यम से बच्चे अपनी सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ते है। बच्चे हिन्दी भाषा को सही तरीके से पढ़ नही पाते है उसके कुछ कारगर उपाय चार्ट, मॉडल आदि के माध्यय से बच्चो को अक्षरो की ध्वनियाँ सीखने के साथ वे उसे संकेत रूप से पहचान भी कर सकते है।

नेशनल करीकूलम फ्रेमवक 2005 के दस्तावेज का प्रारम्भ रवीन्द्रनाथ टैगोर के निबंन्ध सभ्यता और प्रगति के एक उद्धरण से होता है। NCF 2005 का मुख्य सूत्र शिक्षा बिना बोझ के है। पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिधारकों को संतुष्टि प्रदान करने हेतु पाठ्यचर्या को शिक्षा की राष्ट्र एवं समाज विकसित करने का एक साधन होना चाहिए।

NCF 2005 d mí';

1. बालकों को सामाजिक बदलाव के लिए तत्पर रखना।
2. नवीन परिस्थितियों में सामना करने की क्षमता विकसित करना।
3. बालकों के सम्पूर्ण ज्ञान को विद्यालय मे बाहरी जीवन से जोड़ना।
4. बालकों को शिक्षण प्रक्रिया मे रटन्त पद्धति से विभुख रखना।
5. बालकों के सर्वांगीण विकास हेतु पाठ्यचर्या पर जोर।
6. हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिधारकों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करना इसका मुख्य उद्देश्य रहा है।

'kks/k fof/k

शोध के उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध अध्ययन मे आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

'kkèk d: midj.k

प्रस्तुत शोध अध्ययन मे निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों को प्रयुक्त किया गया है:

Lofufer ç'ukoyh

1. हिन्दी विषय के अध्यापकों हेतु प्रश्नावली
2. विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली
3. हिन्दी विषय के विषय विशेषज्ञों हेतु प्रश्नावी

lk{kkRdkj vuqlph

1. प्राचार्य हेतु
2. अभिभावकों हेतु

U;kn'k

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु पलामू संभाग के मेदिनीनगर जिला के सोद्देश्य पूर्ण एवं यादृच्छिक चयन विधि का उपयोग कर कुछ निजी एवं सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया है।

सारणी 1.1

क्रम.स.	अभिधारक	कुल संख्या
1	प्राचार्य	5
2	अध्यापक	40
3	विधार्थी	50
4	विषय विशेषज्ञ	10
5	अभिभावक	20
	कुल	125

सारणी 1.2

क्रम.स.	विद्यालय का नाम	सरकारी /निजी विद्यालय
1	डी.ए.वी. पब्लिक स्कुल	निजी
2	एलिट पब्लिक स्कूल	निजी
3	के.जी. बालिका विद्यालय	सरकारी
4	स्तरोन्नत बालिका विद्यालय, चियांकी	सरकारी
5	हेरीटेज +2 विद्यालय	निजी

lkf[;dh çfofèk;k

NCF 2005 हिन्दी भाषा पाठ्पुस्तकों के प्रति अभिधारकों के प्रत्यक्षण का अध्ययन करने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीक का प्रयोग किया गया है:

प्रतिशत, मध्यमान, औसत प्रतिशत टी– परीक्षण आदि।

fo'y"k.k ,oa 0;k[;k

प्रस्तुत शोध अध्ययन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 हिन्दी भाषा पाठ्यपुस्तकों के प्रति अभिधारकों के प्रत्यक्षण का अध्ययन।

इस शोध में अभिधारक से तात्पर्य न्यादर्श मे चयनित हिन्दी भाषा से संबंध रखने वाले प्राचार्य, हिन्दी अध्यापक, विषय विशेषज्ञ एवं अभिभावकों से है।

çkpk;ksa dk çR;{k.k Lrj lEcUèkh fu"d"kZ

95 प्रतिशत प्राचार्य जो विशेषकर सरकारी एवं निजी विद्यालयो से संबांधित है का मत है कि NCF 2005 हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तके अपने उद्देश्यों को पूर्ति करने में सफल रही। इस तरीके से हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तके संबंधित उद्देश्यो के समावेशन के प्रति प्राचार्यो का प्रत्यक्षण उच्च देखा गया।

v?;kidksa dk çR;{k.k Lrj lEcUèkh fu"d"kZ

85 प्रतिशत अध्यापको का मत है कि हिन्दी भाषा ही ऐसी भाषा है जो राष्ट्र भाषा, राज भाषा अथवा सम्पर्क भाषा बन सकती है।

हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तके पर्यावरण एवं सामाजिक वातावरण को समझने, भाषा सम्बन्धी कौशल विकसित करने, (विशेषकर बोधपूर्वक श्रवण करना, बोलना एवं लिखने की क्षमता तथा गतिविधि आधारित शिक्षण प्रदान कराने मे सहायक सिद्ध हुई है तथा किताबी ज्ञान को वाह्य जीवन से जोड़ने मे सफल रही।

60–80 प्रतिशत अध्यापकों का मानना है कि हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तके सामाजिक समझ विकसित करने, नैतिकता, प्रोत्साहन, इमानदारी, भय, मूल्यों की समझ आदि हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तके से विधार्थी अपनी समझ बढ़ाने मे सफल रहे।

मनुष्य को अपने दैनिक जीवन मे सुनने, बोलने, पढ़ने तथा लिखने की क्रियाओं से सर्वाधिक सुनने की क्रिया करनी पड़ती है।

fo"k; fo'k"kKksa dk çR;{k.k Lrj dk vè;;u

60–70 प्रतिशत विशेषज्ञों का मानना है कि हिन्दी भाषा के पाठ्यपुस्तके सैद्धन्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने के साथ हमे अपने सभ्यता एवं संस्कृति को जोड़े रखने मे सहायक सिद्ध हुई है तथा समाज मे व्याप्त दुष्परिणामों एवं उनसे बचाव हेतु सुक्षाव भी–प्रमुख तथ्यों के रूप मे शामिल किया गया है।

vfHkHkkodksa dk çR;{k.k Lrj dk vè;;u

40–60 प्रतिशत अभिभावको का मत है कि हिन्दी भाषा में बच्चों की अरूचि होने की वजह से वे सही उच्चारण कठिन शब्दों या वाक्यों को करने में असमर्थ महसूस करते है। इस वहज से उन्हे वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियाँ अक्षरों को लिखने में दिखायी पड़ती है वही विशेषकर अंग्रेजी माध्यम के छात्रो का हिन्दी विषय को ज्यादा प्रमुखता न देने की वजह से वे हिन्दी में अशुद्धियाँ ज्यादा पायी जाती है। वही 60 प्रतिशत अभिभावक अपने बच्चों के हिन्दी भाषा के प्रत्यक्षण स्तर से सन्तुष्टि पाये गये अर्थात् उनका प्रत्यक्षण स्तर उच्चतम पाया गया।

fu"d"kZ

पुस्तके आपकी सबसे अधिक सहायता करती है वे आपको सबसे ज्यादा सोचने पर विचार करती है। आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य है बालक के व्यक्तित्व का सर्वागीण विकास तथा उसमे सामाजिक कुशलता के गुणों का विकास करना। शिक्षा के उद्देश्यो को प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन पाठ्यक्रम माना जाता है।

शिक्षा को एक त्रिमुखी प्रक्रिया माना गया है जिसके तीन महत्वपूर्ण अंग शिक्षक, बालक तथा पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है, शिक्षा के तीनो अंगो मे पाठ्यक्रम का विशेष महत्व है। पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार ही सुनियोजित पाठ्यपुस्तकों को भी तैयार करने की आवश्यकता होती है। एक अच्छी पाठ्यपुस्तक शिक्षक एवं छात्र दोनो को ही कक्षा वातावरण में सीखने को प्रेरित करती है। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) ने दो भाषाओं वाला स्वरूप ही सामने रखाः

1. मातृ भाषा या प्रादोशिक भाषा अथवा मातृभाषा और प्राच्च भाषा का संयुक्त पाठयक्रम।
2. निम्नालिखित मे कोई एक भाषा हिन्दी, कोई आधुनिक भारतीय भाषा हिन्दी से भिन्न, कोई विदेशी भाषा आदि।

विद्यालयों को पढ़ाने एवं लेखन पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, खासकर घरेलू भाषा या मातृभाषा के संबंध में बच्चे सीखते परिस्थियों में अधिक सीखते है जिससे बच्चों की सार्थकता दिखायी पड़ती है।

InHki Iph

1. एन.सी.आर.टी. रिर्पोट (2020) विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठयचर्या की रूपरेखा।
2. शर्मा आर.ए., (1995) *शिक्षा अनुसंधान,* आर.लाला बुक डिपो, मेरठ।
3. इण्डियन एजूकेशनल अब्सट्रैक्स (July 1997) Vol.II एन.सी.ई.आर.टी, नईदिल्ली।
4. नेशनल क्रीकुलम फ्रेमवक्र फार डोमीनिका दिसंबर 2004।
5. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) NCERT नई दिल्ली।

****